इक्कीसवीं शताब्दी के राजस्थान के प्रमुख संस्कृत खण्डकाव्य : एक समीक्षात्मक अध्ययन

संस्कृत विषय में पी–एच.डी. की उपाधि हेतु
प्रस्तावित रूपरेखा
(2017–18)

निर्देशिका

प्रो0 (श्रीमती) अगम कुलश्रेष्ठ
संस्कृत विभाग, कला संकाय

शोधार्थिनी

सविता
एम0ए0
संस्कृत विभाग

संकाय प्रमुख
प्रो0जे. के.वर्मा
कला संकाय

विभागाध्यक्ष
प्रो0 (श्रीमती) अगम कुलश्रेष्ठ
संस्कृत विभाग, कलासंकाय

अध्ययन का क्षेत्र–साहित्य वर्ग

दयालबाग एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट
(डीम्ड यूनिवर्सिटी)
दयालबाग़, आगरा–282005

अध्ययन का उद्देश्य

वीर प्रसविनी राजस्थान की धरा सदा से ही भारतीय संस्कृति की उपासिका रही है। इस धरा ने अपनी कोख से न केवल वीर पुत्रों को जन्म दिया अपितु उन्हें धर्म, दर्शन, कला, संस्कृति आदि की शिक्षा भी प्रदान की। राजस्थान यश की दृष्टि से भारत का भव्य भाल, शौर्य की दृष्टि से देश की सबल भुजा और संस्कृति की दृष्टि से भारत का हृदय है।

राजस्थान की धरा पर देवर्षि कलानाथ शास्त्री, हरिराम आचार्य, भट्टमथुरानाथ शास्त्री, सत्यनारायण शास्त्री इत्यादि विद्वानों ने अपनी साहित्य साधना के माध्यम से संस्कृत साहित्य की श्री वृद्धि की है, और वर्तमान समय में भी राजस्थान के विविध जिलों में लेखन कार्य चल रहा है।

संस्कृत साहित्य में खण्डकाव्य की परम्परा अत्यन्त प्राचीन है। खण्डकाव्य की स्पष्ट परिभाषा विश्वनाथ कविराज के साहित्यदर्पण में ही प्राप्त होती है–

''खण्डकाव्यं भवेत्काव्यस्यैकदेशानुसारि च।''

तदनुसार ''काव्य के एक अंश का अनुसरण करने वाला खण्डकाव्य होता है।''

खण्डकाव्य की इस परम्परा में इक्कीसवीं शताब्दी में भारत के हर प्रान्त में कवियों ने अपने–अपने ढंग से अनूठे खण्डकाव्यों का प्रणयन किया है। राजस्थान प्रान्त के जयपुर, जोधपुर, चूरू इत्यादि स्थानों पर कवियों ने अनेक खण्डकाव्यों की रचना की है। मैंने अपने शोध विषय के अन्तर्गत इक्कीसवीं शताब्दी के राजस्थान के संस्कृत खण्डकाव्यों को लिया है जो निम्नलिखित हैंः–

1. सत्यनारायण शास्त्री कृत नवोढाविलासम्, रामप्रिया।
2. श्री रामदवे कृत भारतीविलाम्, कारूण्यकादम्बिनी, परिखाययुद्धम् कलिभूकैतवम् कालकौतुकम्, मेघोपालम्भनम् सौन्दर्यलीलामृतम्।
3. सम्पूर्णदत्तमिश्र कृत सम्राटसंन्यासीसम्भवम्

4. नन्दकिशोर गौतम् कृत प्रतिश्रुतिः

5. द्विजेन्द्रलाल शर्मा 'पुरकायस्थ' कृत दानामृतम्

6. पद्मशास्त्री कृत स्वराज्यम्

7. सुभाषतनेजा वेदालंकार कृत जम्मूकश्मीरविलासम्

8. हरिराम आचार्य कृत नचिकेतकाव्यम् इत्यादि जिनमें से अधिकांश में छन्दों की संख्या शतक है और कुछ की शतक से भी अधिक हैं। **जैसे :–**

1. **नवोढाविलासम् –** खण्डकाव्य में नवोढा स्त्री के हाव भावों का चित्रण किया गया है। मन्दाक्रान्ता छन्द में निबद्ध खण्डकाव्य है।

अऽध्येष्यन्ते मधुररचना सत्यनारायणस्य

प्रेयस्कामा युवति–युवकाः प्राणदां प्रीतिगीतिम्।

सुप्रत्यूषे परिणतिमेतेद् दीर्घयामा त्रियामा

संभोगे द्राग् विरहसमये विप्रलम्भश्च तेषाम्।।

(नवोढाविलासं श्लोक संख्या 125)

2. **रामप्रिया** – रामप्रिया खण्डकाव्य में स्रग्धरा छन्द तथा 105 पघ विद्यमान है। कवि ने सम्पूर्ण काव्य में सीता के चरित्र को प्रस्तुत किया है।

यस्याः कान्तिनिधानदिव्यवपुषोऽजस्रं स्रवचिन्मया

भाणूल्लोकपितामहो गणनया सञ्चित्य सृष्टौ सृजन्।

सौन्दर्यं च शिवं च सत्यमतुलं ह्रष्टान्तरों जायते,

तां रामर्पितजीवनां जनकजां वन्दे प्रसन्नाननाम्।।

(रामप्रिया श्लोक संख्या 01)

3. **भारतीविलासम्–** भारतीयविलासम् काव्य विविध शीर्षकों में विभक्त है जैसेः– लीलायितम्, वर्णवैभवम्, प्रकृतिपोषण यन्त्रोदिता विकृति इत्यादि। इसके यन्त्रोदिता विकृति शीर्षक में यन्त्र प्रधान युग की विकृति का प्रतिपादन किया है। यथा–

वेदाः सन्ति त एव वर्णविभवाः सम्मुद्रिताः सस्वराः

नैषां किन्त्विह पाठका द्विजवरा लभ्याः सुखेनाधुना।

गीता भाष्ययुतापि चास्ति सुलभा ह्रस्मिन् महाभारते

पार्थाः ज्ञानपिपासवो नहि परं नो माधवाः बोधकाः।।

(भारतीविलास श्लोक संख्या 158)

4. **परिखायुद्धम् –** प्रस्तुत खण्डकाव्य में देवताओं में परस्पर एक दूसरे की निन्दा का वर्णन किया गया है।

5. **कलिभूकैतवम् –** प्रस्तुत खण्डकाव्य में मन्दाक्रान्ता, अनुष्टुप, इन्द्रवज्रा इत्यादि छन्दों का प्रयोग किया है। कालिदास की शैली के आधार पर काव्य का आरम्भ होता है। यथा–

कश्चित्कान्तों रुचिरवदनो गर्भजातः कुमार्याः

प्राप्तोऽनाथालयशिशुकुलाद् देवलेनात्मजार्थम्।

लब्ध्वा शिक्षां गुरुकुलगुरोर्देव भाषाविदोऽयम्।

स्वर्गं याते निजगुरूजने तत्पदे देवलोऽभूता। (कलिभूकैतवं 01)

6. **कालकौतुकम्–** इस खण्डकाव्य में वर्तमान में काल के विविध रूपों का वर्णन किया है। कालकौतुकम खण्डकाव्य के अन्तर्गत नवताकौतुकम् शीर्षक में नवयुग की स्थिति का कवि ने चित्रण किया है।

7. **मेघोपालम्भनम्–** सरल, सहज, माधुर्य गुण से युक्त खण्डकाव्य में मेघ की विविध लीलाओं का वर्णन किया गया है।

8. **सौन्दर्यलीलामृतम्–** मंगलम्, सौन्दर्यविभावना, सौन्दर्यलीला इत्यादि विविध शीर्षकों में विभाजित खण्डकाव्य अलंकारिकता की दृष्टि से उत्कृष्ट है।

9. **सम्राटसंन्यासिसम्भवम्–** प्रस्तुत खण्डकाव्य में एक सम्राट संन्यासी कैसे हो सकता है, इसका कथन है। यह काव्य बसन्ततिलका छन्द में निबद्ध है तथा दस आश्रवों में विभक्त है।

10. **प्रतिश्रुतिः –** यह खण्डकाव्य तीन सर्गों एवं 117 श्लोकों में विभक्त है। संयोग सर्ग में नायिका के सौन्दर्य का वर्णन इस प्रकार किया गया है।

मुग्धा मृगाक्षी करिमध्यकार्श्या

धृत्वा कपोले करमात्मनश्च

मन्दस्मिता प्रगेतया विलोक्य

उवाच वाचा सुकुमारया सा।

(प्रतिश्रुति :काव्यं संयोगसर्ग : श्लोकसंख्या 67)

प्रस्तुत खण्डकाव्य शृंगार प्रधान काव्य है।

11. **दानामृतम्–** द्विजेन्द्रलाल शर्मा विरचित इस खण्डकाव्य में पौराणिक काल की दानशीलता की कथाओं को आधार बनाकर खण्डकाव्य को दो घटों में विभक्त किया है। पूर्व घट में दधीचि कथा, जीमूतवाहन कथा, शिविराज कथा, बलिराज कथा और महारथी कर्ण कथा। उत्तर घट में हरिश्चन्द्र प्रताप सिंह, पन्ना धाय इत्यादि ऐतिहासिक प्रसिद्ध दान अमृत का वर्णन विद्यमान है।

12. **जम्मूकश्मीरविलासः खण्डकाव्य–** प्रस्तुत खण्डकाव्य में जम्मूकश्मीर के विविध क्षेत्रों के प्राकृतिक सौन्दर्य का वर्णन किया गया है। काव्य में अनुष्टुप छन्द एवं अंङीरस रूप में अद्भुत रस विद्यमान है।

13. **नचिकेतकाव्यम्** – प्रस्तुत काव्य की कथा कठोपनिषद् से ली गई है।

इस प्रकार राजस्थान प्रान्त में विविध खण्डकाव्य इक्कीसवीं शताब्दी में लिखे गये व लिखे जा रहे हैं।

वस्तुत : इन सभी खण्डकाव्यों में आज के सामाजिक जीवन की विसंगतियों, तनावों, और अन्तर्द्वन्द्वों को सरल रूप में प्रस्तुत किया गया है। खण्डकाव्यों की भाषा क्लिष्टता से रहित सहृदय को आनन्द देने वाली है तथा सरल सहज प्रवाहमयी है।

अस्तु! इन खण्डकाव्यों में वर्णित समसामयिक समाज के समग्र रूप को प्रकाश में लाने के लिए मैंने इन खण्डकाव्यों को अध्ययन का विषय बनाया है।

मैंने राजस्थान के विद्वानों एवं राजस्थान संस्कृत अकादमी तथा विश्वविद्यालयों में अन्वेषण किया। इक्कीसवीं शताब्दी के राजस्थान के अनेक संस्कृत कवियों एवं उनके काव्यों पर शोध कार्य हो चुका है और कुछ पर चल रहा है। डॉ मधुवाला शर्मा ने सन् 2016 में राजस्थान के प्रमुख संस्कृत

मनीषी पुस्तक, रचना प्रकाशन जयपुर से प्रकाशित की है, जिसमें न केवल इक्कीसवीं शताब्दी के अपितु प्राचीन एवं अर्वाचीन दोनों प्रकार के कवियों का संक्षिप्त कथन किया गया है। इसी प्रकार डॉ कमलकान्तबालाण द्वारा लिखित पुस्तक एकविंशशताब्द्याः राजस्थानस्य संस्कृत साहित्यम्, आइडियल प्रकाशन जयपुर से प्रकाशित है जिसमें राजस्थान के 2000 से लेकर 2010 तक के काव्यकारों एवं उनके काव्यों का संक्षिप्त नामोल्लेख है। इसके अतिरिक्त कुछ प्रमुख राजस्थान के संस्कृत काव्यकार हैं। जैसे :– कलानाथ शास्त्री, श्री रामदवे, भट्टमथुरानाथ शास्त्री इत्यादि जिनके एक या दो विशिष्ट महाकाव्यों, नाटकों, उपन्यासों आदि पर शोधकार्य हो चुका है। इसी प्रकार श्री रामदवे कृत महाकाव्यों का समीक्षात्मक अध्ययन विषय पर शोधकार्य सन् 2016 में हो चुका है। इस प्रकार केवल राजस्थान के संस्कृत खण्डकाव्य हैं जिन पर अभी तक कोई भी शोधकार्य मेरे संज्ञान में नहीं हुआ है।

अतः निर्धारित दिशा निर्देशानुसार मैंने अपना शोध का विषय चुना है–

इक्कीसवीं शताब्दी के राजस्थान के प्रमुख संस्कृत खण्डकाव्य : एक समीक्षात्मक अध्ययन।

शोध प्रबन्ध लिखते समय विश्लेषणात्मक एवं गवेषणात्मक पद्धति से अध्ययन करते हुए शोध परिकल्पना को साकार करने का प्रयास किया जायेगा।

मैं अपने इष्टदेव श्री रामचन्द्र जी के चरणों में अपने विषय का उद्देश्य एवं रूपरेखा शोध कार्य हेतु प्रस्तुत करती हूँ। आशा है कि विद्वज्जन मेरे इस प्रयास को स्वीकृत कर इस विषय को लेकर आगे कार्य करने की अनुमति प्रदान करेंगे।

इक्कीसवीं शताब्दी के राजस्थान के प्रमुख संस्कृत खण्डकाव्य : एक समीक्षात्मक अध्ययन

भूमिका : कवि, काव्य एवं काव्य प्रभेद

प्रथम अध्याय –

खण्डकाव्य स्वरूप परिभाषा एवं परम्परा

द्वितीय अध्याय –

राजस्थान – प्रान्तीय खण्डकाव्य एवं खण्डकाव्यकार

तृतीय अध्याय –

अध्येय खण्डकाव्यों का भावपक्ष

क. रस – परिपाक

ख. भावाभिव्यंजन

चतुर्थ अध्याय –

अध्येय खण्डकाव्यों का कलापक्ष

क. भाषासौष्ठव

ख. अलंकार – सौन्दर्य

ग. छन्द – विधान

पंचम अध्याय –

अध्येय खण्डकाव्यों में वर्णन वैशिष्ट्य

क. प्रकृति चित्रण

ख. सौन्दर्य वर्णन

ग. युद्धादि वर्णन

उपसंहार

आधार ग्रन्थ

क.म.	लेखक	पुस्तक	प्रकाशन	वर्ष
1	नन्दकिशोर गौतम 'निर्मल'	प्रतिश्रुतिः	निर्मल प्रकाशन	2001
2	सम्पूर्णदत्तमिश्र	सम्राटसंन्यासीसम्भवम्	श्री उल्लासभवनम्, भरतपुर	2001
3	श्री रामदवे	भारतीयविलासम्	राजस्थानी ग्रन्थागार, जोधपुर	2002
4	द्विजेन्द्रलाल शर्मा	दानामृतम्	डी/117 कृष्ण मार्ग बापूनगर जयपुर	2003
5	पं सत्यनारायण शास्त्री	रामप्रिया	30 आदर्श नगर भिवानी	2004
6	सुभाषतनेजावेदालंकार	जम्मूकश्मीरविलासमः	अलंकार प्रकाशन जयपुर	2004
7	पं. सत्यनारायण शास्त्री	नबोढाविलासम्	30 आदर्श नगर भिवानी	2004
8	श्री रामदवे	परिखायुद्धम्	राजस्थान संस्कृत अकादमी जयपुर	2006
9	श्री रामदवे	कलिभूकैतवम्	राजस्थान संस्कृत अकादमी जयपुर	2008
10	श्री रामदवे	कालकौतुकम्	राजस्थान संस्कृत अकादमी जयपुर	2008
11	हरिराम आचार्य	नचिकेतकाव्यम्	हंसा प्रकाशनम्, जयपुर	2008

सहायक ग्रन्थ

क.म.	लेखक/सम्पादक	पुस्तक	प्रकाशन	वर्ष
1	श्री बाबूलाल शुक्ल शास्त्री	नाट्यशास्त्र	चौखम्बा संस्कृत संस्थान,	द्वितीय संवत् 2040
2	श्री पिंगल नाग	छन्दशास्त्रम्	परिमल पब्लिकेशन, दिल्ली, इलाहाबाद	1978
3	आचार्य मम्मट, सम्पा0 विश्वेश्वर	काव्य प्रकाश	विनोद पुस्तक मन्दिर	1986
4	धनंजय	दशरूपक	भारतीय संस्कृत संस्थान इलाहाबाद	विं सं 2026
5	आचार्य विश्वनाथ	साहित्यदर्पण	मोती लाल बनारसी दास	1987
6	वाचस्पति गैरोला	वैदिक साहित्य और संस्कृति	चौखम्बा प्रतिष्ठान, वाराणसी	1989

7	कृष्ण चैतन्य	संस्कृत साहित्य का नवीन इतिहास	चौखम्बा प्रतिष्ठान, वाराणसी	1989
8	डॉ0 पुष्पा गुप्ता	संस्कृत साहित्य का विशद् इतिहास	चौखम्बा विद्या भवन, ईस्टर्न बुक लिंकर्स	1994
9	एन0ई0 विश्वनाथ अय्यन	व्यावहारिक अनुवाद	प्रतिभा प्रतिष्ठान, नई दिल्ली, संस्करण	1998
10	डॉ0 चन्द्रकला भाटा	भारतीय एवं पाश्चात्य सौन्दर्य शास्त्र, आधारभूत तत्त्व	योगेन्द्र कुमार जैन, वाई0 के0 पब्लिशर्स	1998
11	राधाबल्लभ त्रिपाठी	संस्कृत साहित्य : बींसवी शताब्दी	राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, प्रथम संस्करण	1999
12	डॉ0 मुकेश गर्ग	साहित्य और सौन्दर्य बोध	कनिष्का पब्लिशर्स डिस्ट्रीव्यूटर्स	2002
13	दशरथ द्विवेदी	संस्कृत काव्यशास्त्र में अलंकारों का विकास	राधा पब्लिकेशन्स, द्वितीय संस्करण	2003
14	डॉ0 श्यामलता गुप्ता	सौन्दर्य तत्व मीमांसा	सीमा साहित्य भवन	2005

शब्द कोश

1. संस्कृत हिन्दी कोश–वामन शिवराज आप्टे, मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स, दिल्ली, इलाहाबाद।
2. अमर कोश, अमर सिंह, चौखम्भा संस्कृत सीरीज, वाराणसी।

पत्रिकाएँ

1. अर्वाचीन संस्कृत (त्रैमासिक) पत्रिका, देववाणी परिषद, दिल्ली, 1999
2. शोध प्रभा, राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, नई दिल्ली, 1998
3. भारती, भारती–भवन विजय खन्ना नगर, जयपुर, 1997
4. संस्कृत चन्द्रिका, दिल्ली संस्कृत अकादमी, नई दिल्ली
5. प्राची प्रज्ञा, (विश्वविद्यालय अनुदान आयोग) अन्तर्जाल शोधपत्रिका, डॉ सुज्ञान कुमार मोहन्ती

6. सामनस्यम् बृहद्गुजरात संस्कृत परिषद, अहमदाबाद, 2002

Websites

www.Srijanshilpi.com
www.Sahityakunj.net
www.sahitya_akademi.gov.in